IB DIPLOMA PROGRAMME
PROGRAMME DU DIPLÔME DU BI
PROGRAMA DEL DIPLOMA DEL BI

M06/1/A1HIN/HP1/HIN/TZ0/XX

HINDI A1 – HIGHER LEVEL – PAPER 1
HINDI A1 – NIVEAU SUPÉRIEUR – ÉPREUVE 1
HINDI A1 – NIVEL SUPERIOR – PRUEBA 1

Monday 22 May 2006 (morning)
Lundi 22 mai 2006 (matin)
Lunes 22 de mayo de 2006 (mañana)

2 hours / 2 heures / 2 horas

INSTRUCTIONS TO CANDIDATES

- Do not open this examination paper until instructed to do so.
- Write a commentary on one passage only.

INSTRUCTIONS DESTINÉES AUX CANDIDATS

- N’ouvrez pas cette épreuve avant d’y être autorisé(e).
- Rédigez un commentaire sur un seul des passages.

INSTRUCCIONES PARA LOS ALUMNOS

- No abra esta prueba hasta que se lo autoricen.
- Escriba un comentario sobre un solo fragmento.

नीचे दो उद्धरण दिए गए हैं, (क) तथा (ख)। इन दोनों में से किसी एक पर व्याख्या लिखिए।

१. (क)

जब गाँव के बारे में सोचती तो उसे अपना हरिजन होना अखर जाता। छुआछूत ,घृणा, अपमान और गरीबी की मार झेलता हरिजन समुदाय कितना विवश और कातर है!वह घर जाकर कितनी छोटी हो जाती है!लोग तरह –तरह की बातें करते हैं। लोग उसकी पढ़ाई पर व्यंग्य करते हैं।

५. कहते हैं,कुछ भी कर लो, मजदूरनी ही रहोगी,कोई अच्छा आदमी अपने पास फटकने न देगा। न जाने उसे किन पुण्यों के फल से जगेश्वर राम जैसे पिता मिले जिन्होंने मजदूरी करके भी उसे यहाँ पढ़ने को भेजा ताकि उसपर इस हिकारत की छाया भी न पड़े ।पिता की स्मृति आते ही वह भावुक हो जाती, चेहरा बिगड़ने लगता और बड़ी –बड़ी आँखों में आँसू में आँसू भर जाते ।

१०. वह तब अजय से लिपटकर रोने लगती। फिर अचानक अपनी स्थिति का भान होते ही वह एक झटके से उससे अलग हो जाती। तब अजय उसे समझाता। वह बताता कि उसे ऐसा नहीं सोचना चाहिए। स्थितियाँ बदल जाएँगी। सब कुछ ठीक हो जाएगा। हर चीज के बनने बिगड़ने में समय लगता है।

समाज व्यवस्था की मजबूती में हर युग में एक बड़ा समुदाय नींव की ईंट बनता
१५. है। एक ऐसा समय आता है जब सबसे निम्न समझी जाने वाली जाति शासक हो जाती है, और जो शासक होता है,उसे दलित होना पड़ता है। दुनिया में ,कभी भी किसी भी युग में ऐसा नहीं हुआ कि समाज का हर तबका समान रूप से प्रतिष्ठा का अधिकारी हो। अंतर का स्तर भले भारत जैसा न हो ,पर हर देश में यह अंतर रहता आ रहा है। यह अंतर न होता और सबको समान भागीदारी मिलती तो बड़े –
२० बड़े राज्य भी क्यों खंड –खंड हो जाते?पुनर्जागरण और आधुनिकता के इसी दौर में आँखें खोलकर देखो तो सच्चाई सामने आ जाएगी। समान होने के लिए दलित जातियों को शिक्षा चाहिए, आर्थिक मजबूती चाहिए। इसके लिए डर नहीं, सीना तानकर जीने का अभ्यास करना होगा। अधिकार मिलते नहीं तो छीनना होगा।

अजय की बातों से रूपाली को संतोष होता, वह उसे बाँहों में भरकर चूमने
२५. लगती। रूपाली तय कर चुकी थी कि अगर अजय उसका साथ देता है तो वह स्थिति का मुकाबला जरूर करेगी। देखेगी कि कैसे बदलाव नहीं आता। वह भी मनुष्य है। उसके शरीर में भी वही रक्त बहता है जो सबमें बहता है। वह क्यों और कैसे अछूत हो गई और दूसरे लोग उसे छाँटनेवाले कैसे हो गए?वह खूँटे में बँधी रहनेवाली नहीं है। उसे प्रतिरोध करना है। अजय को जब रूपाली अपना निर्णय
३०. बताती तो वह बहुत खुश होता। कहता कि यही तो वह चाहता है। आखिर इतना पढ़ -लिख चुकने का मतलब ही क्या होगा,जब समाज के बनाए ढाँचे में ही हम जीने को विवश होंगे !

ज्योतिष जोशी 'सोनबरसा' 2000 किताबघर प्रकाशन नई दिल्ली 110002

१. (ख)

रोटी

मैंने तुमसे अपने भूख की चर्चा की थी
और तुम दर्शन बघारने लगे
कि भूख शब्द दो शब्दों के मिलने से बना है
भू-माने पृथ्वी
ख-माने आकाश
और मुझे,समझाने लगे कि
पृथ्वी से लेकर आकाश पर्यंत
सभी कुछ भूख से परिचालित है
मित्र !
शब्दों से खेलना मुझे भी बहुत प्रिय रहा है
लेकिन तब जब मैं भूख से अपरिचित था
तब मैं भी शब्दों को लेकर
दार्शनिक कुलाबे मिलाया करता था
लेकिन आज मेरे लिए भूख का
मात्र एक ही अर्थ है- रोटी
काश ! तुमने शब्दों की जुगाली करके
मेरे भूख के अहसास को
हवा देने के नाम पर
मुझे रोटी खिला दी होती।

डा० नरेश, अगस्त 1993,कादम्बिनी, नई दिल्ली-1